9. एक पुराना शहर - सीयडोणि

पुराने समय के लोग, उनकी चीज़ें व बातें- सब गुज़र गई हैं। सब खत्म हो गये हैं। फिर भी इतिहास की पुस्तकों में लिखा होता है कि पुराने समय में ऐसा होता था, वैसा होता था। यह सब बातें पुराने ज़माने की बची हुयी निशानियों से ही पता चलती हैं।

राजवंशों और सामंतों के समय की बची हुयी निशानियों में से शिलालेख बड़े काम की चीज़ें हैं। शिलालेख का मतलब है पत्थर (शिला) पर कोई बात खोद कर लिखी गयी है। इन शिलालेखों में लिखी बातों को पढ़कर और समझकर ही इतिहासकार बताते हैं कि पहले के दिनों कैसा होता था।

लेकिन इसमें एक दिक्कत भी होती है। शिलालेखों में पुराने समय की बातें उस तरह से नहीं लिखी होती हैं जैसे तुम्हारे पाठ में तुम्हें लिखी मिलती हैं। आओ इस पाठ में एक नया अभ्यास करें। एक पुराने शहर के शिलालेख पढ़ें और पता करें कि उस समय शहरों में क्या होता था, कैसे होता था।

एक पुराना शहर

जब हम भोपाल से झांसी जाते हैं तब रेलगाड़ी ललितपुर नाम के स्टेशन पर रुकती है। ललितपुर के पास आज एक छोटा सा गांव बसा है, जिसका नाम सीरोनखुर्द है। वहां आज से लगभग एक सौ साल पहले सन् 1887 में एक बड़ा लम्बा शिलालेख मिला। उसको जब लोगों ने पढ़कर देखा तो पता चला कि वहां सन् 900 के लगभग एक बड़ा शहर बसा हुआ था। शिलालेख से ही पता चलता है कि उस शहर का नाम सीयडोणि था।

मगर आज तो वहां केवल एक छोटा सा गांव मात्र है। इस पुराने शहर का कोई नामोनिशान नहीं है। शायद पूरा शहर समय के साथ नष्ट होकर मिट्टी में दब गया है। इस शहर का केवल एक निशान बचा है - यह शिलालेख। इसमें सीयडोणि के राजा, व्यापारी, कारीगर, मंदिर, सड़क, घर, बाज़ार - इन सबके बारे में कई बातें लिखी हैं। चलो हम भी इसे पढ़ कर उस खोये हुए शहर के बारे में पता करें। इस शिलालेख में सन् 902 से लेकर सन् 967 तक की कई घटनाओं का ज़िक्र है।

यह कितने साल पुरानी बात हुई?

सबसे पहले सन् 902 की बात है। सन् 902 के शिलालेख में लिखा है-

"सांगट के पुत्र, चण्डूक नामक एक नमक व्यापारी ने शहर के दक्षिणी भाग में श्री नारायण भट्टारक के लिए एक मंदिर बनवाया। पूरे शहर के लोगों ने मिलकर इस मंदिर को एक खेत दान में दिया। खेत से श्री नारायण भट्टारक के लिए चन्दन, स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य (भोग) का इन्तज़ाम हो सकेगा।"

ऐसी बहुत घटनाओं का ज़िक्र सीयडोणि नगर के शिलालेख में मिलेगा।

आगे पढ़ने से पहले एक मिनिट रुको। पाठ के अंत में सीयडोणि का एक नक्शा आधा बना हुआ है। इसमें नारायण भट्टारक के मंदिर को पहचानो।

नारायण भट्टारक का मतलब है, नारायण भगवान। नारायण भट्टारक का मंदिर किसने बनवाया था?

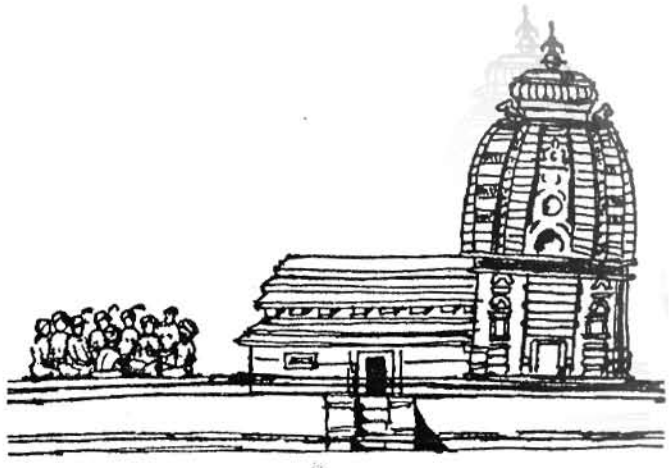

मंदिर

सामंत और मण्डी

सन् 906 की एक घटना के बारे में पढ़ो। शिलालेख में लिखा है-

"सीयडोणि में रहने वाले महाप्रतिहार महासामंताधिपति श्री उन्दभट ने सारे अधिकारियों को सूचित किया - नारायण भट्टारक के मंदिर में पूजा पाठ के लिए यह व्यवस्था की जा रही है कि सीयडोणि के मण्डपिक (यानी मण्डी) में से रोज़ मंदिर को कुछ सोने के सिक्के दिए जायेंगे। जब तक चांद और सूरज रहेंगे तब तक यह व्यवस्था जारी रहेगी। अगर कोई इसका विरोध करे (बाधा डाले) तो उसे पांच महापाप लग जायेंगे। यह उन्दभट के हस्ताक्षर हैं।"

सीयडोणि में किस नाम का सामन्त रहता था?

उसने मंदिर में पूजा पाठ के लिए क्या व्यवस्था की?

नक्शे में देखो कि मण्डी की सबसे उचित जगह कौन सी होगी? वहां तुम सीयडोणि की मण्डी बना दो।

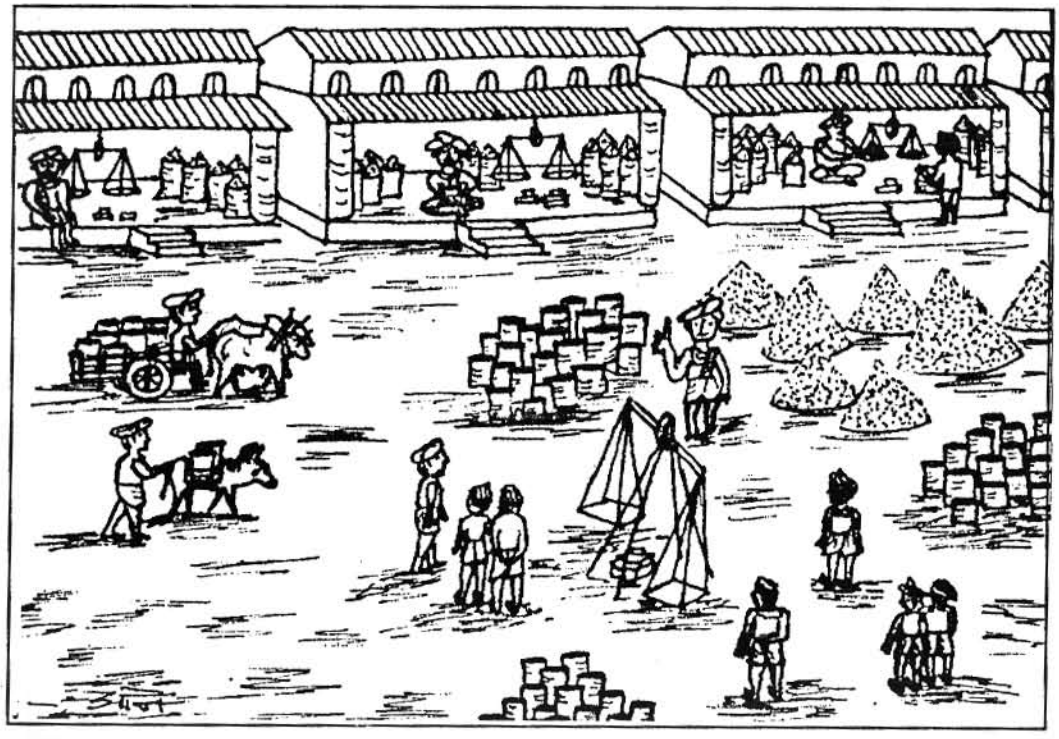

मण्डी

जब सीयडोणि में सामन्त रहता था तो उसका महल भी तो रहा होगा। ठीक जगह सोच कर नक्शे में सामन्त का महल भी दिखाओ।

शक्कर बनानेवाले कंदुक

सन् 907 में,

"शहर के व्यापारियों की समिति के प्रमुखों और सारे कन्दुकों (शक्कर बनाने वालों) के सामने यह व्यवस्था की जा रही है। नमक व्यापारी नागक ने, जो कि चण्डूक का पुत्र है, बहुत कीमत चुकाकर चार-पांच कन्दुकों से यह इन्तज़ाम किया है। ये शक्कर बनाने वाले रोज़ अपने उत्पादन का एक हिस्सा मंदिर को देते रहेंगे। यह नागक के हस्ताक्षर हैं।"

सन् 907 में चण्डूक नहीं, बल्कि उसका बेटा दान कर रहा था। इस आलेख में तुमने कुछ नए लोगों के बारे में भी पढ़ा। ये शक्कर बनाने वाले शायद एक साथ एक ही गली या मोहल्ले में रहते होंगे।

कन्दुक

अब तुम नक्शे में शहर के एक कोने में कन्दुकों का मोहल्ला दिखाओ।

नागक कौन था? नागक ने मन्दिर को दान देने का इन्तज़ाम किस के साथ किया और क्या इन्तज़ाम किया? नागक ने दान की व्यवस्था किस के सामने की?

बाज़ार और दुकानें

सन् 909 में,

"चण्डूक वणिक (व्यापारी) ने प्रसन्नहट्ट (प्रसन्न बाज़ार) में अपनी वीथी (दुकान) नारायण मंदिर को दान में दी। इस वीथी के पूर्व में सुभादित्य की वीथी है, दक्षिण में भट्टदेव का घर है, पश्चिम में चूंआ की वीथी है और उत्तर में हट्टरथ्य (बाज़ार की सड़क) है।"

सन् 909 में ही,

"ताम्बूलिक (पान बेचने वाला) केशव जो कि बटेश्वर का पुत्र है ने चतुर्हट्ट (चतुर बाज़ार) में अपनी वीथी नारायण मंदिर को दान में दी।"

सन् 909 में नारायण मंदिर को किस-किस की दुकानें दान में मिलीं? ये दुकानें किन बाज़ारों में थीं?

नक्शे में किसी जगह पर चतुर्हट्ट बनाओ।

प्रसन्नहट्ट में चण्डूक की दुकान बनाओ। दुकान के चारों तरफ जो चीज़ें थीं उन्हें भी सीयडोणि के नक्शे में दिखाओ।

चण्डूक ने जब अपनी दुकान दान में दी तो आलेख में यह क्यों लिखवाया कि दुकान के चारों तरफ क्या था?

सिलाकूट

सन् 947 में,

"सूत्रधार जेजक, विसिआक, भलुआक और जागूक नाम के सिलाकूटों (पत्थर की सिलायें बनाने वाले) व अन्य सिलाकूटों ने निश्चय किया कि वे नारायण भट्टारक को प्रत्येक पत्थर पर कुछ द्रम्म (पैसे) दान में देंगे।"

शायद उस समय सीयडोणि के घर, महल, मंदिर पत्थर के बनते थे- ये सिलाकूट पत्थरों को तोड़कर इमारत बनाने में मदद करते होंगे।

"पुरन्दर ने नारायण भट्टारक के मंदिर के अन्दर चक्रस्वामि (विष्णु) की मूर्ति की स्थापना की। उस मूर्ति के सामने दिया जलाने के लिए केसव, दुर्गादित्य, केसुलाक, उजोणेक, तुण्डिय आदि सारे तैलिकों (तेल बनाने वालों) ने तय किया कि वे तेल निकालने के हर कोलू पर कुछ तेल दिए के लिए दान में देंगे।"

सिलाकूटों व तैलिकों का मोहल्ला भी नक्शे में दिखाओ।

सीयडोणि के सिलाकूटों और तैलिकों ने मंदिर को किस प्रकार दान दिए?

तो तुमने हज़ार साल पहले के एक शहर में झांक कर देख लिया। उन बीते हुए लोगों के काम धाम और उस शहर की रौनक और चहल-पहल भी तुम्हारे मन में छायी होगी। क्या कुछ होता रहता था उन दिनों! क्या तुम्हारे आसपास कोई शहर है जो हज़ार साल पुराना है? शायद उस शहर में भी कभी वही नज़ारे देखने को मिलते होंगे जो तुमने सीयडोणि में झांक कर देखे। अब कोई तुमसे पूछे क्यों भई तुमने क्या देखा तो क्या बताओगे?

हम पूछते हैं और तुम बताओ।

** तुम्हें सीयडोणि नगर का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन लगा? यानी बहुत जाना माना व्यक्ति जिसकी शहर में बड़ी धाक हो? उसके बारे में कुछ बताओ।*

** बताओ कि सीयडोणि नगर की बनावट कैसी थी? वहां कितने बाज़ार थे? एक या अधिक? बाज़ारों के नाम भी थे क्या? (जैसे आज भी शहरों में बाज़ारों के नाम होते हैं - इतवारा बाज़ार, शास्त्री मार्केट।)*

** वे लोग उस समय बाज़ार को क्या कहते थे? बाज़ार शब्द तो फारसी भाषा का शब्द है। भारत में इसका उपयोग तुर्की लोगों के आने के बाद ही होने लगा। अंग्रेज़ों के भारत आने के बाद बाज़ार के लिए कौन सा शब्द इस्तेमाल होने लगा?*

** सीयडोणि के बाज़ारों में क्या सिर्फ दुकानें ही थीं - और लोगों के घर कहीं अलग थे - या दुकानों के बीच घर थे?*

** "दुकान" भी फारसी शब्द है। दुकानों को तब क्या कहा जाता था?*

** सीयडोणि के किन व्यापारियों से तुम मिले? उनके नाम बताओ। वे किन चीज़ों का व्यापार करते थे?*

** सीयडोणि में कौन-कौन सी चीज़ें बनाने वाले लोग थे?*

** कौन-कौन से कारीगर सीयडोणि में थे?*

* उस समय के कई लोगों के नाम आजकल के लोगों के नामों से फर्क नज़र आते हैं क्या?
* सीयडोणि के मंदिरों को दान क्या नगद सिक्कों में दिया जाता था? कुछ उदाहरण बताओ।
* उन दिनों पैसे को रुपया तो नहीं कहते होंगे। तो क्या कहते थे?
* क्या मंदिरों को ज़मीन जायदाद भी दान में दी जाती थी? कुछ उदाहरण दो। देवता की पूजा के लिए इससे कैसे लाभ मिलता होगा?
* शहर के कारीगर किस-किस तरह से मंदिर को दान देते थे?
* शहर का भोगपति किस तरह से दान देता था?
* क्या ऐसा लगता है कि आसपास के गांव के लोग सीयडोणि आते थे?
* सीयडोणि के बारे में तुम्हें कौन से सन् से कौन से सन् तक की बातें पता चलीं?

सीयडोणि का नक्शा बनाओ

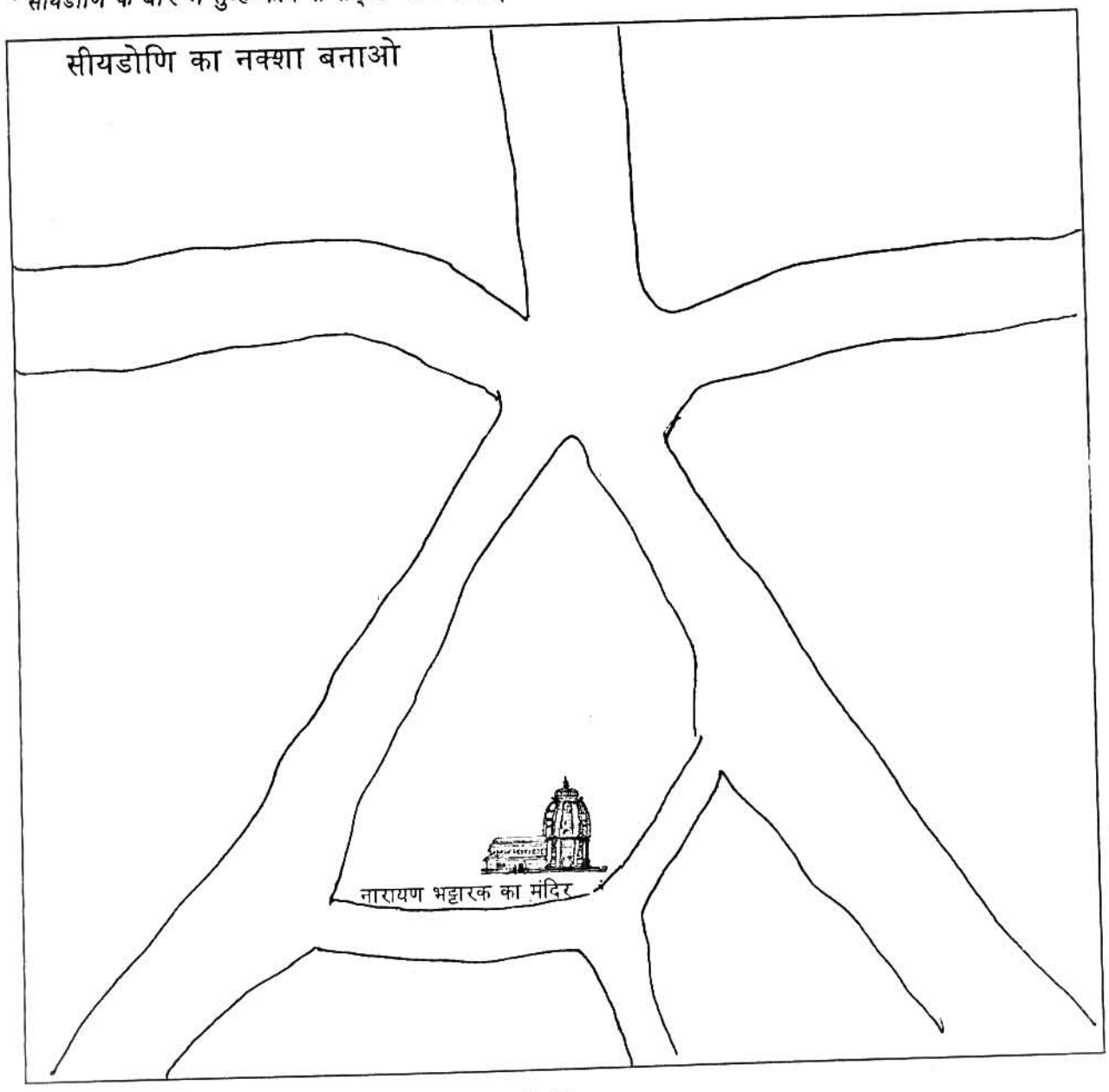

सन् 900 के लगभग अपने देश के कोने-कोने में शहर बस रहे थे। इनमें से कई सीयडोणि की तरह नष्ट हो गए- मगर बहुत सारे आज भी आबाद हैं। मध्यप्रदेश में ही ऐसे बहुत सारे शहर थे।

राजा अशोक के समय में मध्यप्रदेश में केवल तीन शहर थे- कौन-कौन से- बता सकते हो?

सन् 1000 तक आते-आते मध्यप्रदेश में ही कितने सारे शहर हो गए। साथ दिए नक्शे में देखो।

इनमें से कई शहर सीयडोणि जैसे नष्ट हो गए हैं। आज वहां केवल उनके खण्डहर बचे हैं- टूटे मंदिर, ईंट और पत्थर के ढेर, दूर-दूर तक बिखरी हुई खंडित मूर्तियां। इन वैभवशाली शहरों का आज केवल इतना ही बचा है।

मण्डप नाम के शहर को नक्शे में ढूंढो।

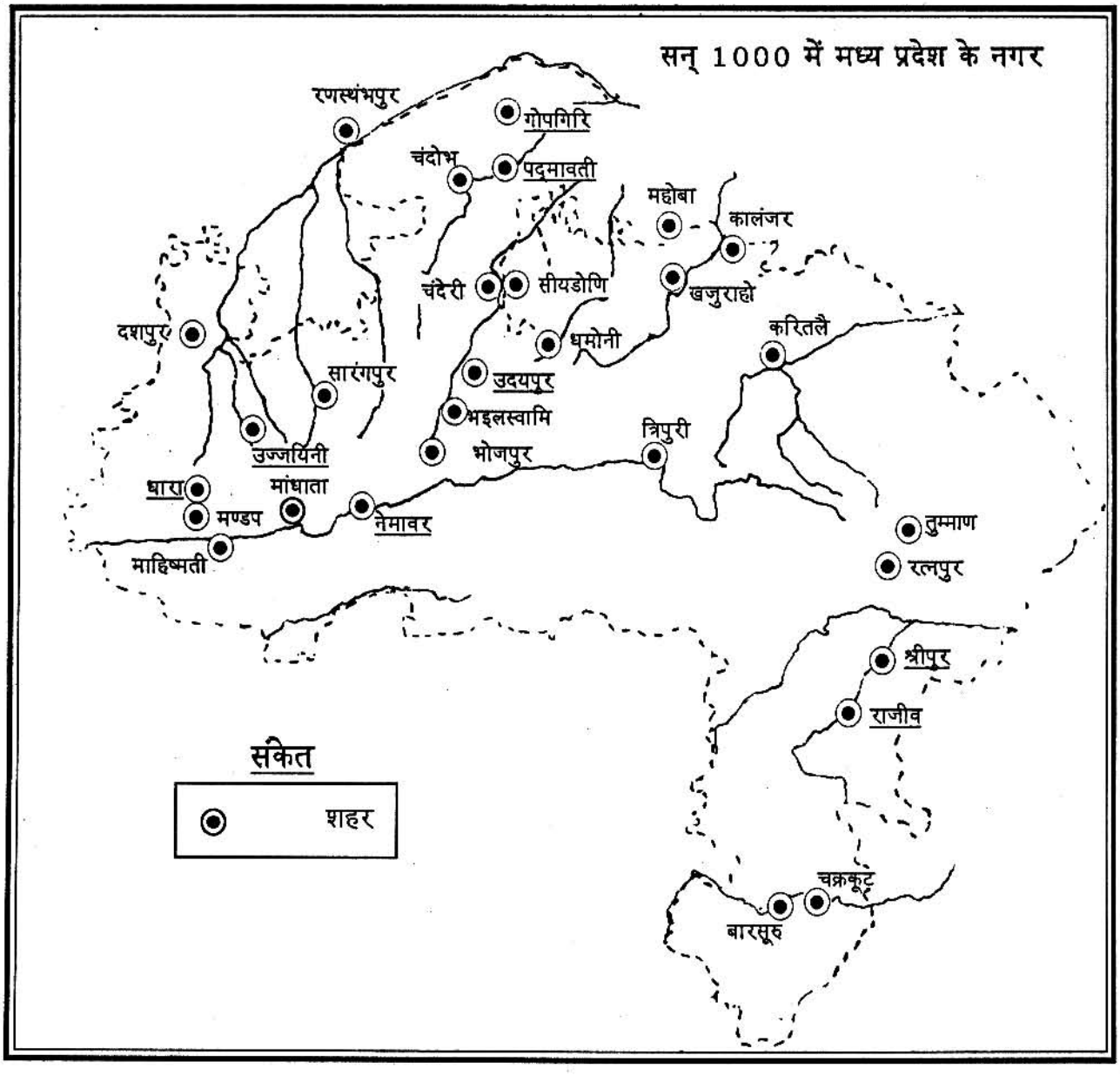

यह शहर एक ऊंचे पहाड़ पर बसा हुआ था। एक समय एक बड़े राज्य की राजधानी हुआ करता था मण्डप नगर। मगर वहां आज खण्डहरों के अलावा केवल एक छोटा सा गांव है। यह जगह आज मांडू कहलाती है। भोजपुर भी ऐसा ही एक शहर था। भोपाल के पास आज भी भोजपुर मंदिर के खण्डहर देखे जा सकते हैं।

मगर कुछ ऐसे भी शहर थे जो समय के साथ अपनी पुरानी जगह से हटकर किसी दूसरी जगह पर बस गये। यह कैसे हो सकता है- शहर कैसे उठकर चल सकता है? मगर हो न हो यह सच बात है। अक्सर तुमने सुना होगा कि फलाना गांव तो वहां बसा था फिर यहां आकर बस गया।

उसी तरह शहर भी अपनी जगह बदलते हैं। नक्शे में भईलस्वामि नाम के शहर को देखो। यह ऐसा ही एक शहर है। यह शहर आज अपनी पुरानी जगह से दो-तीन किलोमीटर की दूरी में बसा है और विदिशा कहलाता है। विदिशा से कुछ बाहर निकलने पर पुराने शहर का मिट्टी से ढका हुआ मलबा दिखाई देने लगता है।

बहुत सारे ऐसे शहर हैं जो तब से आज तक बने हुए हैं- मगर उनके नाम कुछ-कुछ बदल गये हैं। जैसे- चन्देल राजाओं की राजधानी का नाम खजूरवाहक था- आज उसका नाम खजुराहो है।

नीचे कुछ ऐसे ही पुराने शहरों के आधुनिक नाम दिये जा रहे हैं। नक्शे में उनके पुराने नाम हैं और उनके नीचे एक रेखा भी खींची गयी है। क्या तुम इन शहरों के पुराने नाम नक्शे में से पहचान कर यहां लिख सकते हो?

क्र.	*नए नाम*	*पुराने नाम*
1.	*सिरपुर*	
2.	*राजिम*	
3.	*नेमावर*	
4.	*माहेश्वर*	
5.	*धार*	
6.	*मंदसौर*	
7.	*उदयपुर*	
8.	*उज्जैन*	
9.	*ग्वालियर*	
10.	*पवाया*	
11.	*चन्देरी*	
12.	*रायपुर*	